बाईबल सिर्फ यहूदीओं के लिए ?

ईश्वरीय ज्ञान या सन्देश एक समूह विशेष या क्षेत्र विशेष के लिए न होकर पूरे विश्व की मानव जाति के लिये होना चाहिए। अन्यथा परमेश्वर एवं उसके सन्देश पर पक्षपात का आरोप लगेगा।

बाइबिल का सन्देश न केवल मानव जाति के लिए नहीं, और एक बड़े भू-भाग के समूह के लिये भी नहीं, वरन् मात्र एक परिवार व उसके वंशजों मात्र के लिये ही है।

पक्षपात या एक ही परिवार के प्रति प्रेम के विकास की पराकाष्ठा देखिये।

१. **''अभी बालक उत्पन्न भी नहीं हुए थे, और न उन्होंने कोई सुकर्म अथवा कुकर्म ही किया था, तो भी रिबका से कहा गया, ''ज्येष्ठ पुत्र छोटे पुत्र का गुलाम होगा।''**

इसलिए कि परमेश्वर का चुनाव सम्बन्धी उद्देश्य पूरा हो, जो कर्मों पर नहीं, पर बुलाने वाले पर निर्भर है। शास्त्र का लेख भी है, ''याकूब से मैंने प्रेम किया, किन्तु एसाव को अप्रिय जाना।''

रोमियो ९:११-१३

''निष्कर्ष यह कि परमेश्वर जिस पर चाहे कृपा करे और जिसे चाहे हठधर्मी बना दे।''

रोमियो ९:१८

हठधर्मी और निरंकुशता और किसे कहेंगे! क्यों का कुछ प्रश्न ही नहीं है। बाइबिल का परमेश्वर चाहे जिससे प्रेम करे चाहे, जिसका विरोध। तर्क का कोई स्थान नहीं।

२. ''प्रभु ने फिर कहा–'मैं तेरे पिता का परमेश्वर, अब्राहम का

परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं।'''

निर्गमन ३:६

३. ''प्रभु ने कहा–'मैं तेरे साथ रहूंगा। मैंने तुझे भेजा है; इस बात का यह चिन्ह है; जब तू मेरे लोगों को मिस्र देश से बाहर निकाल कर लाएगा तब इस पर्वत पर मेरी, अपने परमेश्वर की, सेवा करेगा।'''

निर्गमन ३:१२

४. ''मूसा और हारून ने कहा–'इब्रानियों (*हिब्रू, इस्राएली*) का परमेश्वर हमें मिला है।'''

निर्गमन ५:३

५. ''मैं इस्राएली समाज के मध्य निवास करूंगा और उनका परमेश्वर होऊंगा। वे जान लेंगे कि मैं प्रभु, उनका परमेश्वर हूं, जिसने मिस्र देश से उन्हें बाहर निकाला है, कि मैं उनके मध्य निवास करूं, मैं प्रभु उनका परमेश्वर हूं।''

निर्गमन २८:४५-४६

६. ''प्रभु मूसा से बोला–'तू इस्राएली समाज से बोलना; तू उनसे यह कहना, 'मैं प्रभु तुम्हारा परमेश्वर हूं।'''

लेवी १८:१-२

७. ''मैं प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर हूं, 'जिसने तुम्हें अन्य जातियों से अलग कर पवित्र किया है।...
तुम मेरे लिए पवित्र होगे; क्योंकि मैं प्रभु पवित्र हूं। मैंने तुम्हें अन्य जातियों से अलग किया है, कि तुम मेरे अपने बनो।'''

लेवी २०:२४-२६

८. ''तुम्हें पवित्र करने वाला मैं, प्रभु हूं। तुम्हारा परमेश्वर होने के लिए मैंने तुम्हें मिस्र देश से बाहर निकाला है; मैं प्रभु हूं।''

लेवी २२:३३

९. ''जब सर्वोच्च परमेश्वर ने राष्ट्रों को
उनका पैतृक अधिकार बांटा,
अलग अलग किया

तब उसने मानव पुत्रों की जनसंख्या के अनुसार
विभिन्न जातियों की राज्य-सीमाएं निश्चित कर दीं।
पर प्रभु का निज भाग इस्राएल है,
उसका निर्धारित पैतृक-अधिकार याकूब है।''

व्यवस्था विवरण ३२:८-९

१०.''मैं इस्राएली राष्ट्र का परमेश्वर, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता हूं।''

यिर्मयाह २९:८

११.''मैं प्रभु-यह कहता हूं; उन दिनों के पश्चात मैं इस्राएली जनता से यह वाचा स्थापित करूंगा; मैं उनके मन में अपनी व्यवस्था प्रतिष्ठित करूंगा, और मैं उसको उनके हृदय पर लिखूंगा। मैं उनका परमेश्वर होऊंगा, और वे मेरे निज लोग होंगे।..''

यिर्मयाह ३१:३३

उपरोक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि बाइबिल का परमेश्वर केवल और केवल इस्राएली समाज का ही परमेश्वर है,न कि पूरे विश्व की मानव जाति का।

इस्राएली समाज किसे कहते हैं, यह निम्न से स्पष्ट होगा।

आदम परमेश्वर द्वारा बनाये गये प्रथम मानव थे। आदम की बीसवीं पीढ़ी में अब्राहम, यहूदियों, ईसाइयों एवं मुस्लिमों के संयुक्त पूर्वज थे। अब्राहम के उनकी दासी हाजिरा से इस्माइल हुआ। (उत्पति १६:१, १५,१६) जिससे मुस्लिम अपनी परम्परा मानते हैं।[१]

अब्राहम की पत्नी सारा से इसहाक हुआ। इसहाक के उसकी पत्नी रिबका से जुड़वां बच्चे एसाव और याकूब हुए। याकूब का अर्थ है, अड़ंगा मारने वाला, अथवा कपट से दूसरे को हटाकर अधिकार जमाने वाला। (हिन्दी बाइबिल, पृष्ठ ३१, उत्पति २५:२६ की टिप्पणी)। जुड़वां होने पर भी याकूब एसाव के पश्चात पैदा हुआ था। एक बार एसाव के भूख की स्थिति में, उसे रोटी और मसूर की दाल देकर,उसकी

---

१. मुहम्मद, इस्माइल के दूसरे पुत्र केदार/कादर के वंश में-डिक्शनरी ऑफ इस्लाम, पृष्ठ २१७ कान्साइज बाइबिल डिक्शनरी, पृष्ठ ३९१, ४६६

विवशता का लाभ उठाकर, उसका ज्येष्ठ पुत्र होने का अधिकार याकूब ने हथिया लिया था। (उत्पति २५:२९-३४) इसी प्रकार इसहाक की वृद्धावस्था में, उसे धोका देकर कि वह एसाव है, याकूब ने इसहाक का विशेष आशीर्वाद प्राप्त किया, जो वह एसाव को देना चाहता था। (उत्पति २७:१-४०)

याकूब ने एक बार परमेश्वर से द्वन्द्व युद्ध किया। तब परमेश्वर ने उसका नाम बदल कर इस्राएल रख दिया, जिसका अर्थ होता है, परमेश्वर से लड़ने वाला। (उत्पति ३२:२२-३० एवं उत्पति ३२:२८ की टिप्पणी, पृष्ठ ४४, हिन्दी बाइबिल)

याकूब/इस्राएल के बारह पुत्र थे। इन्हीं बारह पुत्रों के वंशज इस्राएल, इस्राएल राष्ट्र, इस्राएल समाज, या कौम आदि कहलाते हैं। (उत्पति ३२:३२, ३४:७, ४९:१६, निर्गमन १:८ एवं ४:२२ आदि)

बाइबिल के अनुसार बाइबिल का प्रभु परमेश्वर केवल इस्राएली समाज का ही परमेश्वर है। जैसा कि ऊपर के उद्धरणों से स्पष्ट है। इस्राएल के बारह पुत्रों के वंशज ही बाइबिल के प्रभु परमेश्वर के 'चुने हुए' लोग हैं। बाइबिल का परमेश्वर पूरे विश्व की मानव जाति का ईश्वर नहीं है।

न केवल पुराने नियम में वर्णित प्रभु परमेश्वर केवल इस्राएली राष्ट्र के लिए था वरन् ईसा मसीह स्वयं भी यहूदी ही थे और वे अपने आपको इस्राएल के पुनरूद्धार के लिए ही भेजा गया मानते थे। ईसा मसीह न केवल स्वयं ईसाई नहीं थे वरन् उनकी लेश मात्र भी इच्छा कोई नवीन पंथ चलाने की नहीं थी। ईसा केवल इस्राएल के वंशजों का कल्याण चाहते थे। ईसा की मृत्यु के बाद उनके शिष्यों ने इस्राएलियों/यहूदियों से भिन्न अन्य लोगों को अपने समूह में मिलाकर ईसाई पंथ चलाया।

१. **ईसा यहूदी थे–**

"तुम (*सामरी*) उसकी आराधना करते हो जिसे नहीं जानते। हम (*यहूदी*) उसकी आराधना करते हैं, जिसे जानते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है।"

यूहन्ना ४:२२

कोष्ठक में दिये गये–'सामरी' और 'यहूदी'-शब्द "दि बाइबिल इन टूडे-ज इंग्लिश" में हैं, पर हिन्दी बाइबिल में से निकाल दिये गये

हैं। पर यूहन्ना के इस चौथे अध्याय में ईसा की बातचीत एक सामरी महिला से है। उस बातचीत में वाक्य ४:९ में महिला ने अपने को सामरी व ईसा को यहूदी, पुनः ४:१९ में ईसा को यहूदी, फिर ४:२९ में ईसा ने महिला को सामरी कहकर ही सम्बोधित किया है।अतः ४:२२ में सामरी व यहूदी शब्द निकाल दिए जाने पर भी ''तुम'' और ''हम'' का अर्थ स्पष्ट है और 'यहूदी' शब्द निकालने का उद्देश्य भी स्पष्ट है कि ईसा की धार्मिक मान्यता को छिपाना। फिर भी ''उद्धार यहूदियों में से'' वाक्यांशों से यह मान्यता तो स्पष्ट है कि यहूदियों के अतिरिक्त अन्य लोगों को उद्धार, परमात्मा की कृपा, या बाइबिल का स्वर्ग नहीं मिल सकता।

ईसा इस्राएल के वंशजों का ही कल्याण या पथप्रदर्शन करना चाहते थे। उदाहरण प्रस्तुत है।

२. ईसा केवल इस्राएल के वंशजों के लिये–

''इन बारह को यीशु ने यह आज्ञा देकर भेजा, 'अन्य जातियों के नगरों की ओर न जाओ और न सामरी लोगों के नगरों में प्रवेश करो, वरन् इस्राएल वंश की भटकी हुई भेड़ों के पास जाओ।'''

मत्ती १०:५-६

''यीशु ने उनसे कहा, 'मैं इस्राएल वंश की खोई हुई भेड़ों को छोड़कर अन्य किसी के लिए नहीं भेजा गया।'''

मत्ती १५:२४

''भटकी हुई या खोई हुई भेड़ों'से तात्पर्य'इस्राएल वंश के बिखरे हुए, अलग-अलग स्थानों पर रहने वाले लोग।''

अतः ईसा को ईश्वरीय आदेश (?) केवल इस्राएल के वंशजों के पास ही जाने का था।

ईसा के विचार यहीं तक अपनी स्थिति स्पष्ट करने तक सीमित रहते तो भी ठीक था,पर ईसा तो यहूदियों के अतिरिक्त अन्यों को ''कुत्तों'' से सम्बोधित करने में भी नहीं हिचकिचाए। उद्धरण प्रस्तुत है–

३. विधर्मी कुत्ते–

''उस क्षेत्र से एक कनानी स्त्री आकर चिल्लाने लगी; 'हे प्रभु, दाउद के वंशज, मुझ पर दया कीजिए। मेरी पुत्री बुरी तरह भूत से जकड़ी हुई है।'
पर यीशु ने कुछ उत्तर नहीं दिया। तब उनके शिष्यों ने पास आकर निवेदन किया–'इस स्त्री को बिदा कर दीजिए; क्योंकि यह चिल्लाती हुई हमारे पीछे लगी है।'
यीशु ने उनसे कहा–'मैं इस्राएल वंश की खोई हुई भेड़ों को छोड़कर अन्य किसी के लिए नहीं भेजा गया।''
पर वह स्त्री यीशु के सामने आकर उनके चरणों में गिर पड़ी और बोली–'प्रभु मेरी सहायता कीजिए।'
यीशु ने उत्तर दिया–'बालकों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना ठीक नहीं।'
वह बोली–'हे प्रभु, कुत्ते भी स्वामियों की मेज से गिरा हुआ चूर चार खाते ही हैं।'

मत्ती १५:२२-२७

न केवल विवरण, वरन् ईसा की भावना का विचार पूर्णतः स्पष्ट है। किसी अन्य समूह की दुखिया स्त्री को, उसकी पुत्री की बीमारी हालत में, विवशता की स्थिति में भी, उसे ''कुत्ते'' की श्रेणी में रखना क्या किसी सभ्य समाज में ठीक समझा जाएगा? यह हम पाठकों के विवेक पर छोड़ते हैं।

इस प्रकार बाइबिल से ही यह स्पष्ट है कि बाइबिल का तथाकथित ईश्वरीय सन्देश केवल और केवल मात्र याकूब अर्थात् इस्राएल के वंशजों के लिये ही है।

यही कारण है कि पूर्वोत्तर राज्यों के वनवासी समूहों को इस्राएल के पुत्रों के वंशज या ''गुमी हुई कौम'' बताकर, उन्हें यहूदी समूह का बताकर उनका धर्म-परिवर्तन किया जाता है।

❑❑❑